॥श्रीहरिः॥

LEARN GEETA
तस्मात् योगी भवार्जुन

Ver 7.1
सप्तम संस्करण

॥ विद्या शर्मेण शोभते ॥
गीता परिवार
॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

गीता परिवार द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता का शुद्ध उच्चारण सीखने हेतु अनुस्वार, विसर्ग एवं आघात प्रयोग सहित, चरणानुसार विभाग, मूल संहिता पाठ के अनुकूल

श्रीमद्भगवद्गीता

दशम (10वाँ) अध्याय

विभूतियोग

- लर्नगीता एप्प : app.learngeeta.com
- नया पंजीकरण : Joingeeta.com
- अभ्यास सामग्री : practice.learngeeta.com
- विवेचन सुनें : vivechan.learngeeta.com
- परीक्षा पंजीकरण : exam.learngeeta.com
- YouTube : youtube.com/c/GeetaPariwar
- Instagram : instagram.com/geetaparivar
- साधक पोर्टल : online.learngeeta.com
- पुस्तक क्रय : store.learngeeta.com
- प्रचार सामग्री : learngeeta.com/pracharak
- गीतासेवी बनें : sewa.learngeeta.com
- गीता कक्षा उपहार : gift.learngeeta.com
- Facebook : facebook.com/geetaparivar
- Twitter : x.com/Learn_Geeta

वसुदेवसुतं(न्) देवं(ङ्), कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकीपरमानन्दं(ङ्), कृष्णं(वँ) वन्दे जगद्गुरुम्॥

ॐ

Ver 7.1
सप्तम संस्करण

श्रीपरमात्मने नमः

श्रीमद्भगवद्गीता

अथ दशमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

भूय एव महाबाहो, शृणु मे परमं(वँ) वचः।
यत्तेऽहं(म्) प्रीयमाणाय, वक्ष्यामि हितकाम्यया॥1॥

न मे विदुः(स्) सुरगणाः(फ्), प्रभवं(न्) न महर्षयः।
अहमादिर्हि देवानां(म्), महर्षीणां(ञ्) च सर्वशः॥2॥

यो मामजमनादिं(ञ्) च, वेत्ति लोकमहेश्वरम्।
असम्मूढः(स्) स मर्त्येषु, सर्वपापैः(फ्) प्रमुच्यते॥3॥

बुद्धिर्ज्ञानमसम्मोहः, क्षमा सत्यं(न्) दमः(श्) शमः।
सुखं(न्) दुःखं(म्) भवोऽभावो, भयं(ञ्) चाभयमेव च॥4॥

अहिंसा समता तुष्टिः(स्), तपो दानं(यँ) यशोऽयशः।
भवन्ति भावा भूतानां(म्), मत्त एव पृथग्विधाः॥5॥

महर्षयः(स्) सप्त पूर्वे, चत्वारो मनवस्तथा।
मद्भावा मानसा जाता, येषां(लँ) लोक इमाः(फ्) प्रजाः॥6॥

एतां(वँ) विभूतिं(यँ) योगं(ञ्) च, मम यो वेत्ति तत्त्वतः।
सोऽविकम्पेन योगेन, युज्यते नात्र संशयः॥7॥

अहं(म्) सर्वस्य प्रभवो, मत्तः(स्) सर्वं(म्) प्रवर्तते।
इति मत्वा भजन्ते मां(म्), बुधा भावसमन्विताः॥8॥

Learngeeta.com
LEARN GEETA

मच्चित्ता मद्गतप्राणा, बोधयन्तः(फ्) परस्परम्।
कथयन्तश्च मां(न्) नित्यं(न्), तुष्यन्ति च रमन्ति च॥9॥

तेषां(म्) सततयुक्तानां(म्), भजतां(म्) प्रीतिपूर्वकम्।
ददामि बुद्धियोगं(न्) तं(यँ), येन मामुपयान्ति ते॥10॥

तेषामेवानुकम्पार्थम्, अहमज्ञानजं(न्) तमः।
नाशयाम्यात्मभावस्थो, ज्ञानदीपेन भास्वता॥11॥

अर्जुन उवाच

परं(म्) ब्रह्म परं(न्) धाम, पवित्रं(म्) परमं(म्) भवान्।
पुरुषं(म्) शाश्वतं(न्) दिव्यम्, आदिदेवमजं(वँ) विभुम्॥12॥

आहुस्त्वामृषयः(स्) सर्वे, देवर्षिर्नारदस्तथा।
असितो देवलो व्यासः(स्), स्वयं(ञ्) चैव ब्रवीषि मे॥13॥

सर्वमेतदृतं(म्) मन्ये, यन्मां(वँ) वदसि केशव।
न हि ते भगवन्व्यक्तिं(वँ), विदुर्देवा न दानवाः॥14॥

स्वयमेवात्मनात्मानं(वँ), वेत्थ त्वं(म्) पुरुषोत्तम।
भूतभावन भूतेश, देवदेव जगत्पते॥15॥

वक्तुमर्हस्यशेषेण, दिव्या ह्यात्मविभूतयः।
याभिर्विभूतिभिर्लोकान्, इमांस्त्वं(वँ) व्याप्य तिष्ठसि॥16॥

कथं(वँ) विद्यामहं(यँ) योगिंस्, त्वां(म्) सदा परिचिन्तयन्।
केषु केषु च भावेषु, चिन्त्योऽसि भगवन्मया॥17॥

विस्तरेणात्मनो योगं(वँ), विभूतिं(ञ्) च जनार्दन।
भूयः(ख्) कथय तृप्तिर्हि, शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम्॥18॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA

Ver 7.1
सप्तम संस्करण

श्रीभगवानुवाच

हन्त ते कथयिष्यामि, दिव्या ह्यात्मविभूतयः।
प्राधान्यतः(ख्) कुरुश्रेष्ठ, नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे॥19॥

अहमात्मा गुडाकेश, सर्वभूताशयस्थितः।
अहमादिश्च मध्यं(ञ्) च, भूतानामन्त एव च ॥20॥

आदित्यानामहं(वँ) विष्णुः(र्), ज्योतिषां(म्) रविरंशुमान्।
मरीचिर्मरुतामस्मि, नक्षत्राणामहं(म्) शशी॥21॥

वेदानां(म्) सामवेदोऽस्मि, देवानामस्मि वासवः।
इन्द्रियाणां(म्) मनश्चास्मि, भूतानामस्मि चेतना॥22॥

रुद्राणां(म्) शङ्करश्चास्मि, वित्तेशो यक्षरक्षसाम्।
वसूनां(म्) पावकश्चास्मि, मेरुः(श्) शिखरिणामहम्॥23॥

पुरोधसां(ञ्) च मुख्यं(म्) मां(वँ), विद्धि पार्थ बृहस्पतिम्।
सेनानीनामहं(म्) स्कन्दः(स्), सरसामस्मि सागरः॥24॥

महर्षीणां(म्) भृगुरहं(ङ्), गिरामस्म्येकमक्षरम्।
यज्ञानां(ञ्) जपयज्ञोऽस्मि, स्थावराणां(म्) हिमालयः॥25॥

अश्वत्थः(स्) सर्ववृक्षाणां(न्), देवर्षीणां(ञ्) च नारदः।
गन्धर्वाणां(ञ्) चित्ररथः(स्), सिद्धानां(ङ्) कपिलो मुनिः॥26॥

उच्चैःश्रवसमश्वानां(वँ), विद्धि माममृतोद्भवम्।
ऐरावतं(ङ्) गजेन्द्राणां(न्), नराणां(ञ्) च नराधिपम्॥27॥

आयुधानामहं(वँ) वज्रं(न्), धेनूनामस्मि कामधुक्।
प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः(स्), सर्पाणामस्मि वासुकिः॥28॥

Learngeeta.com

अनन्तश्चास्मि नागानां(वँ), वरुणो यादसामहम्।
पितृणामर्यमा चास्मि, यमः(स्) संयमतामहम्॥29॥

प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां(ङ्), कालः(ख्) कलयतामहम्।
मृगाणां(ञ्) च मृगेन्द्रोऽहं(वँ), वैनतेयश्च पक्षिणाम्॥30॥

पवनः(फ्) पवतामस्मि, रामः(श्) शस्त्रभृतामहम्।
झषाणां(म्) मकरश्चास्मि, स्रोतसामस्मि जाह्नवी॥31॥

सर्गाणामादिरन्तश्च, मध्यं(ञ्) चैवाहमर्जुन।
अध्यात्मविद्या विद्यानां(वँ), वादः(फ्) प्रवदतामहम्॥32॥

अक्षराणामकारोऽस्मि, द्वन्द्वः(स्) सामासिकस्य च।
अहमेवाक्षयः(ख्) कालो, धाताहं(वँ) विश्वतोमुखः॥33॥

मृत्युः(स्) सर्वहरश्चाहम्, उद्भवश्च भविष्यताम्।
कीर्तिः(श्) श्रीर्वाक्च नारीणां(म्), स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा॥34॥

बृहत्साम तथा साम्नां(ङ्), गायत्री छन्दसामहम्।
मासानां(म्) मार्गशीर्षोऽहम्, ऋतूनां(ङ्) कुसुमाकरः॥35॥

द्यूतं(ञ्) छलयतामस्मि, तेजस्तेजस्विनामहम्।
जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि, सत्त्वं(म्) सत्त्ववतामहम्॥36॥

वृष्णीनां(वँ) वासुदेवोऽस्मि, पाण्डवानां(न्) धनञ्जयः।
मुनीनामप्यहं(वँ) व्यासः(ख्), कवीनामुशना कविः॥37॥

दण्डो दमयतामस्मि, नीतिरस्मि जिगीषताम्।
मौनं(ञ्) चैवास्मि गुह्यानां(ञ्), ज्ञानं(ञ्) ज्ञानवतामहम्॥38॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA

यच्चापि सर्वभूतानां(म्), बीजं(न्) तदहमर्जुन।
न तदस्ति विना यत्स्यान्, मया भूतं(ञ्) चराचरम्॥39॥

नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां(व्ँ), विभूतीनां(म्) परन्तप।
एष तूद्देशतः(फ्) प्रोक्तो, विभूतेर्विस्तरो मया॥40॥

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं(म्), श्रीमदूर्जितमेव वा।
तत्तदेवावगच्छ त्वं(म्), मम तेजोंऽशसम्भवम्॥41॥

अथवा बहुनैतेन, किं(ञ्) ज्ञातेन तवार्जुन।
विष्टभ्याहमिदं(ङ्) कृत्स्नम्, एकांशेन स्थितो जगत्॥42॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां(य्ँ) योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विभूतियोगो नाम दशमोऽध्यायः ॥

॥ॐ श्रीकृष्णार्पणमस्तु॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA

स्तर 4 उच्चारण नियमावली

Ver 7.1
सप्तम संस्करण

माहेश्वर सूत्र

माहेश्वर सूत्रों की उत्पत्ति भगवान नटराज (शिव) के द्वारा किये गये ताण्डव नृत्य से मानी गयी है। डमरु के चौदह बार बजाने से चौदह सूत्रों के रूप में ध्वनियाँ निकली, इन्हीं ध्वनियों से व्याकरण का प्राकट्य हुआ।

1. अइउण् 2. ऋलृक् 3. एओङ् 4. ऐऔच् 5. हयवरट् 6. लण् 7. ञमङणनम् 8. झभञ् 9. घढधष्

10. जबगडदश् 11. खफछठथचटतव् 12. कपय् 13. शषसर् 14. हल्

शब्दावली

- **'प्रत्याहार'** - प्रत्याहार का अर्थ होता है – संक्षिप्त कथन। माहेश्वर सूत्रों के आदि और अन्तिम वर्ण को मिलाकर प्रत्याहार बनता है। उदा. = 'अच्' प्रत्याहार - 'अच्' से 'अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ऐ, ओ, औ' इन वर्णों का ग्रहण होगा।
- **लोप** – दो वर्णों की संधि के दौरान किसी वर्ण को हटा देने की प्रक्रिया को लोप कहते हैं।
- **प्रकृतिभाव** – संधि के समय आदेश, आगम या लोप की स्थिति नहीं हो, पदों की पूर्ववत स्थिति रहना।
- **प्रत्यय** – जिन वर्ण या वर्ण समुदायों का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता वे किसी शब्द के पश्चात् लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं। प्रत्यय पांच प्रकार के होते हैं – सुप्, तिङ्, कृत्, तद्धित, स्त्री प्रत्यय।
- **उपसर्ग** – ऐसे शब्द जो किसी धातु के पूर्व जुड़ कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं या उसी अर्थ की पुष्टि करते हैं। उदा. – हार शब्द में विभिन्न उपसर्ग जुड़कर अनेक अलग-अलग अर्थ के शब्दों की सिद्धि करते हैं – 1. प्रहार, 2. संहार(विनाश), 3. विहार(घूमना)। संस्कृत में कुल 22 उपसर्ग हैं - प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप।

॥ द्वित्व(आघात) नियम॥

मूल द्वित्व नियम - अनचि च, स्वरात् संयोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र।

स्वर के बाद संयुक्त वर्ण आने पर संयुक्त वर्ण में प्रथम वर्ण का द्वित्व पाणिनीय व्याकरण के 'अनचि च' सूत्र से एवं पाणिनीयशिक्षा के 'स्वरात् संयोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र' सूत्र से होता है। यह उत्सर्ग नियम हैं जो अपवाद छोड़कर सभी स्थानों पर प्रयुक्त हो जाता है।

इस नियम के कुछ अपवाद नियम हैं जिनके सूत्र इस प्रकार हैं।

1. परं तु रेफहकाराभ्याम्। *- पाणिनीयशिक्षा*

संयुक्त वर्ण में यदि प्रथम वर्ण रेफ अथवा हकार है तो द्वित्व नहीं होता है। उदा. – पर्युपासते, गुह्यतमम्

2. (न) सवर्णे। *-प्रातिशाख्य*

यदि संयुक्त वर्ण में दोनों वर्ण समान हैं तब वहाँ स्वाभाविक रूप से ही द्वित्व होता है इसीलिये वहाँ अतिरिक्त द्वित्व की आवश्यकता नहीं होती। उदा. – उत्सन्न, मय्यावेश्य

3. त्रिप्रभृतिषु शाकटायनस्य *-पाणिनीयशिक्षा*

जब संयुक्त वर्ण में तीन व्यञ्जनों का संयोग हो। उदा. – कृत्स्नम्, भक्त्या

4. प्रथमैर्द्वितीयास्तृतीयैश्चतुर्थाः। *- पाणिनीयशिक्षा*

संयुक्त वर्ण में पांचो वर्ग के सभी वर्णों(स्पर्श वर्णों) का द्वित्व करने में द्वितीय वर्ण से पहले प्रथम वर्ण का और चतुर्थ वर्ण से पहले तृतीय वर्ण का प्रयोग किया जाता है। उदा. – जिघ्रन् = जि(ग्)घ्रन्)

Learngeeta.com

योगेशं(म्) सच्चिदानन्दं(वँ), वासुदेवं(वँ) व्रजप्रियम्।
धर्मसंस्थापकं(वँ) वीरं(ङ्), कृष्णं(वँ) वन्दे जगद्गुरुम्॥

© GEETA PARIWAR
गीता परिवार के साहित्य को किसी भी प्रकार से अन्य संस्था अथवा अन्य स्थान पर उपयोग/प्रकाशित करने से पूर्व अनुमति लेना आवश्यक है। अनुमति लेने हेतु पूर्ण प्रयोजन के साथ हमें consent@learngeeta.com पर ईमेल करें।